Ministry of Culture
Government of India

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वृत्तचित्र विमोचन

"धरतीपुत्र वाकणकर"

(4 अप्रैल, 2022)

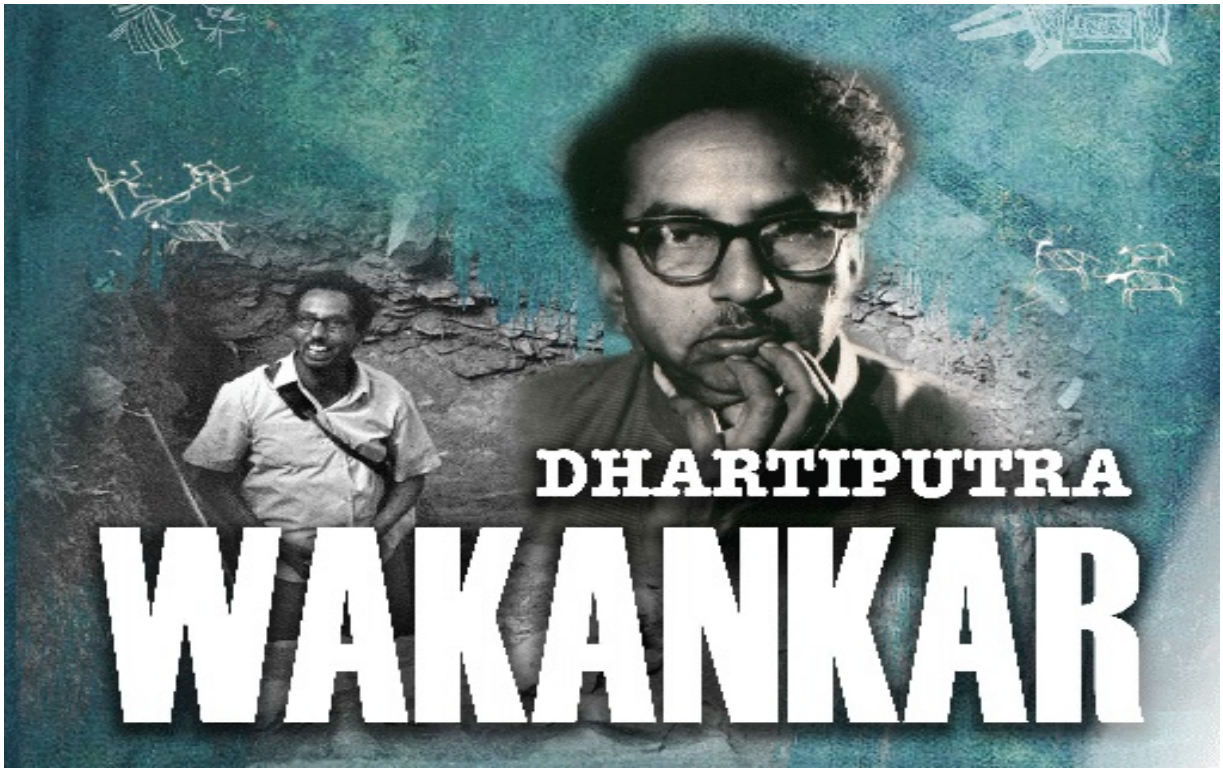

आदि दृश्य विभाग

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र

नई दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातत्त्वेत्ता, कला आचार्य, मुद्राशास्त्री, साहित्यकार, अभिलेखविद्, भाषाविद् इतिहासज्ञ, समाजसेवी, महान कला साधक पद्मश्री डॉ0 विष्णु श्रीधर वाकणकर वैदिक नदी सरस्वती के प्राचीन प्रवाहपथ के खोजकर्ता, जिन्होंने वर्ष 1957 में भीमबेटका पुरास्थल की खोज कर भारतीय इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत की जिस कारण उन्हें भारत में शैलचित्र कला अध्ययन का '*पितामह*' भी कहा जाता है। इस पुरास्थल को वर्ष 2003 में यूनेस्को द्वारा विश्वदाय पुरास्थल की सूची में शामिल किया गया। डॉ0 वाकणकर के भारतीय संस्कृति के प्रति किये गए अथक प्रयासों को देखते हुए तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी जी ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित करने हेतु आमंत्रित किया जिसका दृश्यांकन इस वृत्तचित्र में किया गया है।

वृत्तचित्र में दृश्यांकित भीमबेटका पुरास्थल पर चित्र बनाते वाकणकर जी

ऐसे महान इतिहासकार के पदचिन्हों का अनुकरण करते हुए एवं उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने आदि दृश्य विभाग की स्थापना की जो प्रत्येक वर्ष अपने स्थापना दिवस के अवसर पर पद्मश्री डॉ0 वाकणकर जी की स्मृति में स्मृति व्याख्यान का आयोजन करता है इस श्रृंखला का छठा व्याख्यान दिनांक 4 अप्रैल, 2022 को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इसके साथ भीमबेटका पुरास्थल पर वर्ष 2019 में आयोजित चित्रकार कार्यशाला से प्राप्त पेंटिंग्स पर आधारित एक प्रदर्शनी ''भीमबेटका: चित्रकारों का स्वर्ग'' का भी आयोजन संस्था के प्रदर्शनी कक्ष में किया गया।

कार्यक्रम श्रृंखला के क्रम में ही 4 अप्रैल, 2022 को विभाग द्वारा डॉ0 वाकणकर जी के जीवन व कार्यों पर आधारित एक वृत्तचित्र (डाक्यूमेंट्री) ''धरतीपुत्र वाकणकर'' जिसका निर्माण नारद कम्युनिकेशन के माध्यम से किया गया, का भी विमोचन किया गया। वृत्तचित्र में वाकणकर जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है साथ ही वाकणकर जी के परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त उनके मित्रों, सहकर्मियों तथा छात्रों आदि के साक्षात्कार को भी सम्मिलित किया गया है जिन्होंने वाकणकर जी के साथ के अनुभवों को साझा किया। वाकणकर जी केवल इतिहासकार ही नहीं, बल्कि एक समाज सेवी भी थे, संघ से जुड़ाव के साथ ही उनमें एक स्वतंत्रता सेनानी की छवि भी देखने को मिलती है। संस्कार भारती के संस्थापक सदस्य व महामंत्री होने के साथ ही वह कला भारती, कला पत्रिका के परामर्शदाता भी रहे। इस तरह के अनेकों पक्षों का इस वृत्तचित्र में चित्रण करने का पूर्ण प्रयास किया गया है।

वृत्तचित्र में सम्मिलित साक्षात्कार (पद्मश्री बाबा योगेन्द्र जी, डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी डॉ0 नारायण व्यास जी, श्री रहीम गुट्टी जी)

कार्यक्रम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सम्वेत सभागार में शाम 4:45 बजे प्रो0 बी0 एल0 मल्ला जी के स्वागत भाषण के साथ प्रारंभ हुआ जिसके पश्चात् वृत्तचित्र का विमोचन मुख्य अतिथि श्रद्धेय बाबा योगेन्द्र जी (संस्थापक सदस्य, संस्कार भारती) के करकमलों द्वारा विशिष्ठ अतिथि माननीय श्री वासुदेव कामथ जी (न्यास सदस्य, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र), डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी (माननीय सदस्य सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र) तथा प्रो0 बी एल0

मल्ला जी (विभागाध्यक्ष, आदि दृश्य) की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस सुअवसर पर डाक्यूमेंट्री के सह निर्देशक श्री मयंक सिंह भी उपस्थित रहे साथ ही सभागार में कई सुप्रसिद्ध विद्वतजनों, विभिन्न संस्थाओं के शोधार्थियों एवं छात्रों की भी भारी उपस्थिति रही।

गणमान्य विद्वतजनों द्वारा वृत्तचित्र का विमोचन (क्रमशः बाएं से दाएं प्रो0 बी0 एल0 मल्ला, डॉ0 सच्चिदानंद जोशी, पद्मश्री बाबा योगेन्द्र जी, श्री वासुदेव कामथ जी, श्री मयंक सिंह जी)

इस अवसर पर श्रद्धेय बाबा जी ने भारतीय शैल कला को विश्व भर में पहचान दिलाने के लिए वाकणकर जी का आभार व्यक्त किया। श्री वासुदेव कामथ जी ने वाकणकर जी के जन्मशताब्दी वर्ष पर भीमबेटका पुरास्थल पर आयोजित चित्रकार कार्यशाला में आये चित्रकारों के भाव को वाकणकर जी से जोड़ते हुए बताया की जो चित्र वहां बनाए गए उन्हें बनाते समय चित्रकारों के मन में जो भाव था, जो श्रद्धा थी उनका जुडाव सीधे वाकणकर जी से था जिन्होंने उन चित्रों की खोज कर भारतीय इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की थी।

डॉ0 वाकणकर के शोध पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 सच्चिदानंद जोशी जी ने सभी का धन्यवाद दिया और श्री योगेन्द्र बाबा जी को इस कार्य में मार्गदर्शक बताते हुए उनके प्रति आदर

प्रकट किया और यह आश्वासन दिया कि आगामी समय में इस वृत्तचित्र को अलग अलग जगहों पर दिखाया जाए ऐसी व्यवस्था की जा रही है ताकि आने वाली पीढ़ी वाकणकर जी के कार्यों से सीख ले, उन्होंने इसे नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोता बताया।

सभागार में उपस्थित सभी विद्वतजनों आदि ने दर्शाए गए ऐतिहासिक स्रोतों एवं वाकणकर जी के कार्यों से परिचित होने के लिए विभाग एवं संस्था को अत्यधिक सराहा तथा यह आग्रह किया की इसे और व्यापक स्तर पर विभिन्न संसाधनों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाए। साथ ही शोधार्थियों व छात्रों ने भी उपरोक्त वृत्तचित्र को देखने के पश्चात बताया की वाकणकर जी के कार्यों को जिस प्रकार इस वृत्तचित्र में दृश्यांकित किया गया है वह आगामी शोधों में उनके लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगा।

आभार

उपरोक्त वृत्तचित्र का निर्माण इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के माननीय सदस्य सचिव डॉ० सच्चिदानंद जोशी जी के प्रेरणास्वरुप तथा आदि दृश्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो० बी० एल० मल्ला जी के सफल मार्गदर्शन व आदि दृश्य विभाग के अनुसंधान अधिकारी डॉ० दिलीप कुमार संत, परियोजना सहयोगी श्री प्रवीण सी० के०, परियोजना सहायक सुश्री रीता रावत आदि के सम्मिलित सराहनीय प्रयास के परिणामस्वरूप संभव हो सका। साथ ही वृत्तचित्र के निर्देशक श्री अतुल जैन व सह निर्देशक श्री मयंक सिंह का भी आभार प्रकट किया जाता है जिनके सराहनीय प्रयासों से इस वृत्तचित्र का निर्माण हो पाया।

प्रमोद कुमार
परियोजना सहायक
आदि दृश्य विभाग